IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"आधुनिक काल में संगीत समारोहों का स्वरूप"

डॉ0 निर्मला जोशी

असि0 प्रोफेसर संगीत विभाग

एम0बी0जी0पी0जी महाविद्यालय

हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

रवि प्रसाद आर्या (शोधार्थी)

एम0बी0जी0पी0जी महाविद्यालय

हल्द्वानी, नैनीताल (उत्तराखण्ड)

वैदिक काल से ही भारतीय संगीत में संगीत समारोहों की परम्परा चली आ रही है जिसे समज्जा या समन नाम से भी जाना जाता था। वर्तमान मे इन्हें सम्मेलन या समारोह के नाम से जाना जाने लगा है।

"भारतीय शास्त्रीय संगीत भारत की संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग रहा है भारतीय संगीत वैदिक काल में ही बहुत समृद्ध रहा परन्तु समय के साथ मध्य काल में भारतीय संगीत विभिन्न विदेशियों के सम्पर्क में आने, उनके आक्रमण तथा विभिन्न दरबारी राजाओं एवं कलाकारों के आपसी मतभेद के कारण संगीत का विघटन शुरु हो गया। जिसके फलस्वरूप 19वीं सदी के पूर्वाद्ध तक संगीत की स्थिति बहुत खराब हो गयी और हमारा संगीत सूत्रहीन होकर आगे बढ़ने लगा। भातखण्डे जी ने संगीत के विभिन्न ग्रन्थों का अध्ययन किया तथा इस क्षत–विक्षत और नष्टप्रायः संगीत को अपनी दृढ़ वैज्ञानिक यिति पर प्रतिष्ठित किया।"[1]

भातखण्डे जी द्वारा संगीत समारोहों या परिषदों के आयोजन के प्रयास वर्तमान में संगीत के विभिन्न पक्षों के विकास का मूल आधार है क्योंकि उस समय भारतीय संगीत अनेक विदेशी आक्रमणकारियों के कारण क्षत–विक्षत हो गया था इसे समेटने में, कलाकारो को एकत्रित करने एवं संगीत को संरक्षित करने में इन समारोहो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

"जैसा कि सर्वविदित है, संगीत एक प्रदर्शन कला है जिसमें कलाकारो द्वारा मनोभावों की संगीतमय अभिव्यक्ति श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर आनन्द के सागर में डूबो देती है। क्योंकि संगीत का सीधा सम्बन्ध मन से है और हृदय कला का उदग्म स्थल है जिसका स्पष्टीकरण हृदय और मन के विज्ञान , मनोविज्ञान के अध्ययन से होता है। यह मनुष्य की अन्तर्निहित भावनाओं एवं व्यवहार के परिप्रेक्ष्य मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता

[1] पं0 भातखण्डे के ग्रन्थों का संगीत शिक्षण में योगदान–शर्मा जया – पृ0सं0– 20

है। संगीत कला मन की आन्तरिक भावनाओं का उद्‌गार होने के कारण मनुष्य की मनःस्थिति एवं मस्तिष्क से सम्बन्धित है।''[2]

''भारतीय संगीत प्रारम्भ से ही दो धाराओं मे प्रवाहित होता रहा है एक वह, जिसका प्रयोग धार्मिक समारोहों में परमार्थिक दृष्टि से किया जाता रहा है और दूसरा वह जिसका प्रयोग लौकिक समारोहों पर केवल मनोरंजन की दृष्टि से किया जाता रहा है।''[3]

संगीत एक आलौकिक आनन्दनुभूति कराने वाली कला है जो सृष्टि के प्रारम्भ से ही आनन्द का श्रोत बनकर अविरल गति से प्रवाहित हो रही है। यह अलौकिक आनन्द कलाकार एवं श्रोताओ के मध्य एक ऐसे रिश्ते का निर्माण करता है जो दोनों को परमानन्द के साथ जोड़ता है।

आधुनिक काल के प्रारम्भ से है शास्त्रीय संगीत समारोह को चुनौतियों एवं समस्याओं का सामना पड़ा है।

विदेशी आक्रमणकारियों के कारण भारतीय संगीत बुरी तरह प्रभावित हुआ।

परिस्थितियों के अनुसार संगीत की स्थिति तब समाज में सम्मानजनक नहीं थी। लोग संगीत को अच्छा नहीं मानते थे। ऐसी स्थिति में समारोह से आम जनता को जोड़ पाना और समारोह का आयोजन कर पाना एक बहुत बड़ी समस्या थी।

समस्याओं के समाधान हेतु सार्थक प्रयास संगीत महर्षि विष्णु नारायण भातखण्डे जी द्वारा किया गया। उन्होंने कलाकारों एवं संगीत सुधियों को एकत्रित कर विचार–विमर्श के माध्यम से संगीत शास्त्र तथा प्रयोग पक्ष की समस्याओं का समाधान निकाला। जिससे संगीत समारोहों में कलाकारों व श्रोताओं की संख्या में काफी बढ़ोत्तरी हुई।

''वर्तमान में संगीत समारोह के आयोजन हेतु बड़े सभागारों की अगर बात करें तो ये सभागार भी पूर्णतया अब वैज्ञानिक सुलभताओं के अनुसार तैयार किये जाते है क्योंकि समारोह के बदले स्वरूप को बड़े आयोजन स्थलों पर ज्यादा श्रोताओं के साथ आयोजित किया जाता है। जिसमें सभागारो की बनावटों में इको, रिफलेकशन तथा रेजोनेन्स (प्रतिध्वनि, परावर्तन, अनुनाद) का ध्यान रखा जाता है। हॉल की दीवारों को नरम परतों से मढ़ने के लिये सेलोटेक्स आदि का प्रयोग किया जाता है। जिससे ध्वनि के परिवर्तन से अत्यधिक इको या गूँज न हो। आज के इस तकनीकी युग में तो बड़े–बड़े महानगरों में संगीत सभाओं तथा संगीतवार्ताओं के लिये अलग–अलग भवनों का निर्माण होता है।''[4]

समारोह में कलाकारों के मंच प्रदर्शन एवं संगीत अभ्यास पर वैज्ञानिक उपकरणों का बहुत प्रभाव पड़ा है।

कम्प्यूटर व इण्टरनेट के प्रयोग ने संगीत कला एवं कलाकारों दोनो का ही बहुत बड़े स्तर पर प्रचार–प्रसार किया साथ ही संगीत में गायन और वादन के कम्पोजिंग और रिकार्डिंग तकनीक को और भी आधुनिक एवं समृद्ध बनाया साथ ही संगीत को सर्वजन सुलभ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

[2] भारतीय संगीत मनोवैज्ञानिक आयाम–नाहर कुमार साहित्य, पृ0सं0–04
[3] भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण– शर्मा स्वतंत्र –पृ0सं0–03
[4] हिन्दुस्तानी संगीत परिवर्तनशीलता– बैनर्जी असित कुमार– पृ0सं0– 101–102

कम्प्यूटर के माध्यम से संगीत के सम्बन्ध को दो प्रकार से समझा जा सकता है। पहला सांगीतिक ध्वनि के विश्लेषण और दूसरा सांगीतिक ध्वनि के सहयोग में

''कम्प्यूटर की सहायता से सांगीतिक धुनों को भी उत्पन्न किया जा सकता है तथा राग और धुनों को पहचाना भी जा सकता है।''[5]

समारोह में मंच प्रदर्शन के लिए माइक्रोफोन ने संगीत के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति लायी।

''गायन ही नहीं वाद्यो की प्रस्तुतियाँ विशेषकर कम ध्वनि वाले वाद्य जैसे संतूर, सितार, जलतरंग तथा सरोद आदि मे माइक्रोफोन का प्रयोग एवं परिणाम सुखद तथा सुन्दर है।''[6]

आज जब भारत ही नहीं अपितु पूरा विश्व एक वैश्विक महामारी से लड़ रहा है। ऐसे मे हम कम्प्यूटर व इण्टरनेट के माध्यम से एक दूसरे से जुड़ने के साथ–साथ अपनी हर जरुरतों के लिए इसी पर निर्भर हो गये है। और ऐसे ही हमारे संगीत ने भी इस विपरीत परिस्थिति में कम्प्यूटर, इण्टरनेट के माध्यम से पूरे भारतवर्ष में संगीत प्रमियों, कलाकारों, शिक्षको सभी को एक साथ जोड़ कर रखा है।

21वीं सदीं की इस वैश्विक महामारी कोरोना ने मानव जीवन के हर पहलू को पूर्ण रूप से प्रभावित करके उसकी जीवन शैली को पूर्णतः बदल दिया।

कोरोना काल में संगीत व संगीत से जुड़े लोगो की आवश्यकतानुसार संगीत में डिजिटल माध्यम एक बेहतर विकल्प के रूप में सामने आया।

आधुनिक काल में विज्ञान ने निश्चित रूप से संगीत एवं संगीत समारोहों दोनो को ही प्रभावित किया है। और इसके प्रभाव ज्यादातर सकारात्मक ही रहे है। जिसने इस परम्परा को और भी सुलभ व समृद्ध बनाया है।

वहीं अगर नकारात्मक प्रभावों की बात करें तो विज्ञान इस समारोहों में लोगो को डिजिटल माध्यम से करीब से करीब लाया है परन्तु प्रत्यक्ष रूप से लोग काफी दूर हो गये है।

अतः हम कह सकते है कि विज्ञान ने भले ही समारोहों को सुलभ एवं प्रचारित, प्रसारित कर संरक्षण दिया है परन्तु इसने समारोहों के वास्तविक आनन्द व अनुभूति का अभाव जरुर कायम किया है।

[5] भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग– गौतम अनीता–पृ0सं0– 69
[6] संस्मरण (तबले के जादूगर पद्मभूषण पं0 समता प्रसाद जी की स्मृति में,– जौहरी रेनू–पृ0सं0– 117

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा जया– पंडित भातखण्डे के ग्रन्थों का संगीत शिक्षण में योगदान – कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2012(वर्ष)
2. नाहर कुमार साहित्य– भारतीय संगीत मनोवैज्ञानिक आयाम– प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली (वर्ष–1999)
3. शर्मा स्वतंत्र– भारतीय संगीत एक ऐतिहासिक विश्लेषण– अनुभव पब्लिकेशन इलाहाबाद (वर्ष–2014)
4. बनर्जी कुमार आसित– हिन्दुस्तानी संगीतः परिवर्तनशीलता शारदा पब्लिशिंग (वर्ष–1992)
5. गौतम अनीता– भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली (वर्ष–2002)
6. जौहरी रेनू– संस्मरण (तबले के जादूगर पद्मभूषण पं0 समता प्रसाद जी कि स्मृति में – अनुभव पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद (वर्ष–2015)